IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 4, October-December, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

नेपथ्य राग में स्त्री: एक अनुशीलन

नंदू मुरली, शोधार्थी
हिन्दी विभाग, कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
686022-केरल

सारांश

आज भी स्त्री की समस्या घर, समाज व कार्यक्षेत्र जैसे हर एक जगह पर अलग-अलग दृष्टियों से मौजूद है। सदियों से ये सारी कुरीतियां एक ज़हरीले विषाणु की भांति समाज में मौजूद हर एक सदस्य के दिल और दिमाग पर कार्य कर रही हैं, चाहे वह बुज़ुर्ग हो या युवा। सदियों पहले की 'खना' की कहानी भी इसी का प्रमाण है, और आज की 'मेधा' की कहानी भी इससे बहुत बड़ा फर्क नहीं रखती। अगर थोड़ा बहुत फर्क दिखाई दे भी रहा है तो वह सिर्फ आज की आधुनिकता और शिक्षा की ही खासियत है। फिर भी सोच एक हद तक वहीं की वहीं रह गई है। इसी ओर इशारा करती है हिन्दी साहित्य की प्रमुख लेखिका 'मीरा कान्त' और उनकी रचना 'नेपथ्य राग'।

बीज शब्द: नेपथ्य राग, मीरा कान्त, स्त्री की समस्या, पुरुषसत्तात्मक समाज, लिंग भेद, नारी उत्पीड़न, समानता ।

मूल आलेख

स्त्री की समस्या हर युग से चली आ रही प्रश्न-विमर्श व समस्या है, जिसके समाधान ढूंढने के संघर्षरत कार्य में डूबा हुआ है सदियों से लेखक गण। आज कल प्रयुक्त हो रहे 'लेखक' शब्द ही इसका उदाहरण है, जो 'जेंडर-न्यूट्रल'(लैंगिक तटस्थ) के रूप में अपनाया जा रहा है। ताकि लैंगिक पूर्वाग्रह को कम करके समानता का भाव ला सके, चाहे पुरुष-स्त्री या ट्रांसजेंडर हो, सभी को समान आदर, सम्मान के साथ लेखकीय जगत में जगह हो, सिर्फ लेखकीय दुनिया में ही न होकर हर जगह व क्षेत्र में यह बदलाव लागू हो रहा है, होता जा रहा है। सदियों से ऐसे सक्रिय-क्रांतिकारी बदलाव के न आने से काबिलीयत व हुनर के होते हुए भी कइयों की ज़िन्दगी तहस-नहस हो चुकी है। ऐसी जिन्दगियों का चित्रण करते हुए हर एक पीढी को, उनके बीते-काटे ज़िन्दगी के कष्ट-नष्ट के बारे में अवगत कराने का प्रयास आज के लेखक गण कर रहा है, ताकि एक अच्छे भविष्य का उदय हो। हिन्दी साहित्य में ऐसे बहुत सारे उदाहरण मौजूद है, ऐसे ही हिन्दी साहित्य जगत के द्वारा समाज की विभिन्न प्रश्न-विमर्श-समस्याओं को रचनाओं द्वारा आवाज़ देनेवाले एक सक्रिय लेखक है 'मीरा कान्त' ।

मीरा कान्त हिन्दी साहित्य जगत के एक अद्वितीय हस्ताक्षर है। जिन्होंने अपने रचनागत वैशिष्ट्य द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों व कुरूपताओं के खिलाफ आवाज़ उठायी है। हर दृष्टि से अद्वितीय, धैर्यशील, मानवतावादी, सहिष्णु एवं संकोची स्वभाव की स्वाभिमानी लेखक मीरा कान्त, अपनी अध्ययनशील व्यक्तित्व के चलते समाज के हर पैमाने के साधारण-असाधारण, विचित्र-वैचित्र्य विषयों के अंतर्चेतनाओं तथा अंतर्मन की भावनाओं तक पहुंच कर उसके तह तक को प्रस्तुत करता है। उनके अद्वितीय व्यक्तित्व व चरित्र के बारे में सुषमा भटनागर का कथन है कि, ".....मैंने मीरा को साहित्य अध्येता और एक सहिष्णु, धैर्यवान, श्रोता के रूप में ही देखा-जाना था।"[1] उनके विद्वत्तापूर्ण व्यक्तित्व ही उनके अद्वितीय रचनाओं का प्रमाण है, जिसमें खुद समाज अंकित हो जाता है।

उनकी सारी रचनाएं समाज में उपेक्षित-तिरस्कृतों की वाणी है, जिनके अपनी वाणी में शक्ति एवं पक्ष में न्याय के होते हुए भी समाज, संस्कृति एवं राजनीति उन्हें अनदेखा कर रखा है। ऐसी रचनाओं के विशिष्ट उदाहरण 'नेपथ्य राग' नाटक भी हैं।

जिसके केंद्र में मौजूद है उपेक्षित-तिरस्कृत एवं अस्वीकृत उन कई सारी महिलाओं की कहानी, जहाँ हुनर व काबिलीयत के होते हुए भी नेपथ्य में ही खड़े होने के लिए बाध्य हुआ है।

'नेपथ्य राग' उन्हीं रागिनियों की कथा है, जो सदियों से उपेक्षित एवं अस्वीकृत हैं। वह भी समाज रूपी रंगमंच के केंद्र में न होकर बल्कि नेपथ्य में, वहां भी सबसे पीछे खड़ा है, अपनी मर्जी से नहीं बल्कि दूसरों के धक्के व शोषणों के चलते। समाज में चल रहे पुरुषसत्तात्मक विचारधाराओं के चलते, कोने में ढकेले गए कई नारी जीवनों का उदाहरण हमारे पुराणों एवं इतिहास से लेकर आज तक के साहित्य व समाज में भी मौजूद हैं।

इस नाटक के केंद्र में खड़ा है 'मेधा' और उसकी 'माँ'। मेधा एक कामकाजी महिला है, जिसे ऑफिस में अपनी सहकर्मियों

द्वारा पूर्ण रूप से उपेक्षा एवं तिरस्कार का सामना करना पड़ती है, ना ही उसका कोई सुनता है, ना ही उन्हें मौका देता है, हमेशा उसे नीचे दिखाने की कोशिश में ही लगा रहता है सब लोग । इसका सिर्फ एक ही कारण बनता है, वह हैं उसका नारी होना, उर्फ लेडी ऑफिसर होना, "लेडी ऑफिसर.....यही तो प्रॉब्लम है.....परंतु बर्दाश्त कहां कर पाते हैं मुझे वे लोग.....मेरे ज़्यादातर फैसलों का विरोध करते हैं.....कमियाँ ढूंढते हैं मुझमें.....दे फ़ील चैलेंज्ड!"[2]। यहां यही बातें मेधा की मां को भी झकझोर कर रखा है, उन्होंने भी अपने इस लंबे जीवन में इस तरह की कई समस्याओं के सामना किया है। वह उच्च पदाधिकारी और इस तरह के व्यवहारों का अनुभवी भी रह चुकी है, "यह विरासत में मिला है क्या करें वे.....मैं जब पहली बार मजिस्ट्रेट बनकर गयी थी तो मेरा चपरासी.....मेरे सब-ऑरडिनेट मुझे 'सर' कहकर बुलाते थे। उनके लिए मैडम नहीं सर थी।"[3] यहाँ सदियों से चली आ रही स्त्री की दारुण स्थिति का थोड़ा-बहुत बदला, आधुनिक रूप में स्त्री की पर्दाफाश हुई है।

जब मेधा अपनी व्यथा अपनी माँ से कहने लगती है तभी वह मेधा को 'खना' की कहानी सुनाती हैं। 'खना' की कहानी अर्थात पहली महिला ज्योतिषी की कहानी, जो अपनी विलक्षण बुद्धि, काबिलीयत व हुनर से मालव गणनायक चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के नवरत्नों में भी जगह पा लेती है, फिर भी पुरुषमेधा समाज के कारण वहां उन अन्य नवरत्नों के नीचे-पीछे, खुद नेपथ्य में मूक सभासद के रूप में रहने के लिए विवश हो जाती है। जो लिंग भेदवादी चिंताधारा के चलते उत्पीड़न का शिकार हो जाती है।

'खना' उज्जयिनी आती है मन में एक संकल्प व ध्येय लेकर, कि ज्योतिष की अमूर्त ज्ञान परंपरा को अपनी विलक्षण बुद्धि व काबिलीयत के चलते अपने-आप में हासिल करके अपने कठिन परिश्रम और तप से ज़िन्दगी के अंतर्चेतना व अंत:संवेदनाओं को जानना । वराह मिहिर के शिष्यत्व प्राप्त करके वह उसमें आधी जीत भी हासिल कर लेती है, लेकिन शीघ्र ही उसे पृथुयशस की पत्नी एवं आचार्य वराह मिहिर की पुत्रवधू बनने पड़ती है। यह उसकी ज़िंदगी में काफी परिवर्तन ला खड़ा करती है, उसे अपने आप की, अस्तित्व की बात की चिंता होने लगती है कि, खना कहीं खोता चला जा रही हैं, "पता नहीं काका.....कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है की खना कहीं खोती जा रही है।" [4]

जब वह ख्याति-प्रसिद्धि हासिल करने लगती है तो, दूसरे उनसे जलने लगते हैं-ईर्ष्या करने लगते हैं, यहां तक कि इन ईर्ष्यालुओं द्वारा बनाए जानेवाले ईर्ष्यापूर्ण बातों पर शिक्षित एवं ज्ञानी लोग भी भरोसा करने लगते हैं, इसका एक उत्तम उदाहरण है मालवगणनायक सम्राट की पत्नी 'महादेवी' एवं उनके द्वारा कही गयी इन बातें, "दासी कह रहे थी कि आचार्य वराह मिहिर की पुत्रवधु खना ने अपने श्वसुर का बनाया हुआ तैल पी लिया था.....ज्योतिष्मति तैल।"[5]

यहां हमें समाज के बीच हो रहे स्वार्थपरकता की बात का खुला चित्रण देखने के लिए मिलता है, जो यहां स्त्री होकर भी महादेवी, स्त्री पर उर्फ खना पर भरोसा नहीं करना चाहती। वहां भी विक्रमादित्य जो पुरुष होकर भी खना के ज्ञान से एवं अंतर्दृष्टि से प्रभावित होकर उसे सभासद के रूप में चुनना चाहता है। इससे महादेवी के अंदर नया संदेह जन्म लेती है, "आपकी इस दुविधा का कारण आपका खना के प्रति छिपा हुआ आकर्षण तो नहीं।"[6] यहां स्त्री का, स्त्री के प्रति असुरक्षागत भाव का भी चित्रण किया गया है।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की ओर देखा जाए तो लीक से हटकर कुछ करने की क्षमता रखनेवाला, एक विकासोन्मुख विचार रखनेवाले पात्र है, जो खना को सभासद के रूप में, नवरत्नों का हिस्सा बनाना चाहता था, ताकि उससे समाज एवं दुनिया में सकारात्मक बदलाव ला सके। उनका विचार लिंग पर आधारित न होकर सिर्फ बौद्धिक विचार पर ही आधारित था, लेकिन नवरत्न के कुछ लोग इसे लिंग भेदवादी चिंताधारा के रूप में ही देखा-समझ था, पुरुष सत्तात्मक समाज के नकारात्मक सोच व विचारों के पथ पर चलते-चलते सोच भी नकारात्मक हो निकलता है कि, "सत्ता के केंद्र में एक युवती! अपनी बौद्धिक प्रतिभा के बल पर।"[7]

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य को इस बात का पता ज़रूर था कि यह एक आसान काम न होनेवाला है, फिर भी उन्होंने कोशिश की, "निर्णय अभूतपूर्व तो है ही.....विवाहित ज्ञानमार्गी स्त्री को सभासद के रूप में न जाने कौन कितना स्वीकार करेगा।"[8] लेकिन वह यह नहीं जानता था की उनके नवरत्नों के अंदर भी पुरुष वर्चस्ववादी, पुरुष सत्तात्मक विचारों की परंपरा में फंसे कुछ मूर्तियां भी मौजूद थे ।

पहले वराहमिहिर इसके खिलाफ नहीं थे, धीरे-धीरे बात बदलते गये, आखिर वराह मिहिर की राय बदल ली, "इस संदर्भ में उपस्थित रत्नों के मत में ही मेरा मत है।"[9] अगर सभासद के रूप में खना का स्वीकार किया गया होता तो राष्ट्र की भलाई होती,

भविष्य भी चमकता, यहां तक की वराह मिहिर के कुल को भी वह प्रज्वलित कर देता, खुद उनके कहे ही इसका सबूत है, कि "सभासद के रूप में उसका चयन मेरे कुल की.....मिहिर कुल की कीर्ति पताका को दूर-दूर के प्रदेशों तक ले जाता। ओह!"[10]

आखिरकार नवरत्न, खना को सभासद के रूप में स्वीकारता तो है पर व्यवस्थाओं के अधीन, और यह व्यवस्थाएं बताने के लिए चुना गया, खुद वराह मिहिर को ही। यह बात उसके अंतर्मन तक को हिला देता है, क्योंकि उनके अंतर्मन की आवाज़ ही यह दर्शाता है कि, "स्त्री जातकों की हृदय से भूरि-भूरि प्रशंसा लिखने वाला मैं.....'बृहत-जातक' ग्रंथ का प्रणेता आचार्य वराह मिहिर आज जीवन में स्त्री के प्रश्न को लेकर बहुत साधारण हो गया है। मैंने सर्वसम्मति की ओट में अपने व्यक्तिगत अंत पर अवगुण्ठन डालने की चेष्टा की.....उसे छिपाया।"[11] यहां हमें सच्चे दिल की आवाज सुनाई देता है, जो सौ प्रतिशत सही भी है, लेकिन सर्वसम्मति की ओट में उन्होंने अपने व्यक्तिगत विचार को व्यक्त नहीं किया, बल्कि जो लिंग भेदवादी चिंताधारा के चलते प्रयाण करनेवाले पुरुषसत्तावादी लोगों के साथ मिलकर उनके योजनाओं के लिए हामी भी भरा और उनके लिए अपने शिष्य एवं पुत्रवधू के भविष्य को ही नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। एक अलग नज़र से देखा जाए तो यहां हमें महाभारत के द्रोणाचार्य का भी याद आ जाती हैं।

आखिर नवरत्नों को खना के राजसभा में प्रवेश एवं नवरत्नों में उनकी नियुक्ति पर कुछ व्यवस्थाओं के चलते हामी भरना पड़ा, परंतु उन्हें वहाँ जिह्वा विहीन स्त्री को ही सभासद के रूप में स्वीकार्य था, उसकी जीभ काट ली जाएगी, "उनका कहना है कि यदि स्त्री सभासद बने तो पहले उसकी जीभ काट ली जाए।"[12]

ऐसी बातें अपने गुरुमुख से सुनकर खना का मन बिलख उठती है, अपना जीवन व भविष्य उसे अंधकारमय सा लगने लगती है। अपने जीवन के विलक्षण स्थिति में पहुँचने पर उसे सदियों की भविष्यवाणी अपने आँखों के सामने प्रदीप्त हो नज़र आने लगती है, "स्त्री सभासद.....पिताश्री, आप तो व्यर्थ ही चिंतित है। श्रावण क्या यह तो आषाढ़ से भी पहले के मेघ है। बरसेंगे नहीं। आषाढ़ अभी नहीं आया.....नहीं आया..... आषाढ़ आने में कई संवत्सर बीत जाएंगे.....कई युग.....यह नेपथ्य है.....इसे मंच तक पहुँचने में समय लगेगा.....कल्पांत.....कई युग.....।"[13] यहां खना की अंतर्वेदना गूंज उठती है।

आखिर अंत में क्या हुआ, खना सभासद के अंग बनी या नहीं यह कोई नहीं जानता, लेकिन जुबान तो कट ही गयी। कुछ लोगों का कहना है की जुबान स्वयं खना ने काटा है, यहां दादी को, दादी की दादी ने बताया था की स्वयं वराह मिहिर ने किया था।

यह सदियों से चली आ रही कहानी है। यहां दादी ने, दादी की दादी से, फिर मेधा अपनी माँ से, ऐसी कहानी कई मेधाओं तक पहुँच रही है। अब भी समाज न बदला, फिलहाल कोई बहुत बड़ा बदलाव दिख नहीं रही है, फिर भी न कोई बहुत बड़ा परिवर्तन करते हुए भी बदल रहा है समाज, तब तक यह कहानी कइयों की ज़िंदगी से होते हुए गुजरेंगे। उसको रोकने की कोशिश है यह नाटक क्योंकि, "वैचारिक अभिव्यक्ति से रहित स्त्री ही समाज को स्वीकार्य रही है।" [14]

यहां हमें दादी भी पढ़ी-लिखी नज़र आती है, उन्हें उसकी दादी की कामकाजी ज़िंदगी के चलते पुरुषसत्तात्मक व्यवस्था के नकारात्मक पक्ष से ही यह कहानी प्राप्त हुई होगी। मेधा की माँ भी उच्च पदाधिकारी है। वह भी इस तरह के व्यवस्था एवं उपेक्षा तथा तिरस्कारों का सामना कर चुकी है। इसलिए वह भी इस कहानी की जानकार हो गयी, हकदार हो गयी। अब मेधा ने इसका सामना किया तो यह कहानी उसे मिली, अब उससे अगली पीढ़ी की ओर। ऐसे पीढ़ी दर पीढ़ी चलने के लिए तैयार कि गयी कहानी नहीं है यह। बल्कि पुरुषसत्तात्मक विचारों को बदलने के लिए तैयार की गयी कहानी है 'खना' की कहानी, और यह नाटक उसकी कोशिश व एक नया कदम है, और उसमें लेखिका पूरी तरीके से जीत भी हासिल कर चुके हैं, "प्रतिभाशाली स्त्री के दुखद अन्त के दर्द व चुभन को शब्द देना नाटककार का उद्देश्य है। इस उद्देश्य में लेखिका की सफलता निर्विवाद है।"[15]इतिहास, वर्तमान और भविष्य तक का विस्तार को दर्शाते हुए डॉ. जयदेव तनेजा ने 'नेपथ्य राग' नाटक के बारे में कहा है कि, "यह एक संयोग भी हो सकता है, पर स्त्री मुक्ति का मुद्दा एक ज्वलंत मुद्दा तो है ही। खास तौर पर 'नेपथ्य राग' नाटक इसे इतिहास, वर्तमान और भविष्य तक विस्तार देता है।"[16]

यहां मेधा की माँ, मेधा को खना की कहानी सुनाती हैं, सिर्फ खना कौन है, उसके साथ क्या हुआ था, यही सब बताने के लिए ही नहीं, असल में यहां यह भी एक कारण होते हुए भी मनोवैज्ञानिक तरीके से बातों को एक अलग नज़रिया भी यहां लेखिका ने प्रदान किया है।

यहां मीरा कान्त ने सिर्फ पुरुषसत्तात्मक व्यवस्था के नकारात्मक प्रभाव के चंगुल में फंसे पुरुष पात्र को ही नहीं बल्कि

अच्छे-सकारात्मक प्रभाव के पात्रीभूत पात्रों को भी व्यक्त किया है, उनमें प्रमुख है 'मालवगणनायक चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य'। लीक से हटकर उस ज़माने में, उस समय स्त्री को सभासद बनाने की क्रांतिकारी सोच व बदलाव उन्होंने ला खड़ा किया। अन्य पात्रों की और देखें तो- सुबन्धु भट्ट, वररुची, आदि भी उदाहरण है, एक हद तक वराह मिहिर को भी कह सकते हैं, इन सारी बातों से हमारे सामने यही बात दर्शाने की कोशिश किया जा रहा है की हर पुरुष, पुरुषसत्तात्मक व्यवस्था के वर्चस्ववादी सोच के मूढ़ हस्ताक्षर नहीं है।

यह बदलाव अच्छी शिक्षा व अच्छे सोच के माध्यम से ही संभव हो पाएगा, तभी समाज में परिवर्तन ला खड़ा कर पाएगा। यहां सकारात्मक पात्रों द्वारा यही बात को दर्शाया गया है। समाज के इस संस्कारोन्मुख परंपरावादी विचारधारा के खिलाफ लड़ाई, जो सदियों से स्त्री के द्वारा चली जा रही है, वह असल में पुरुष से न होकर उसके विचारधारा के आंतरिक पक्षों से है और उसे सुधारने के लिए उसके ज्ञान चक्षुओं को सही दिशा एवं शिक्षा द्वारा समानता की ओर, जो लिंग पर आधारित न होकर विकासोन्मुखता की ओर एकजुट बनकर आगे लेके जाना होगा। तब जाके हमारा भविष्य उज्वल हो पाएगा।

आजकल के समय में हर जगह वक्त के हिसाब से मौका और रास्ता खुलता जा रहा है, उसका सही तरीके से इस्तेमाल करना बेहद ज़रूरी है, कठिनाई और परेशानी तो हर जगह और हर समय होता रहता है, उसके सामने सदियां भी बिल्कुल एक तरह लगने लगता है। प्रश्न है तो समाधान भी अवश्य होगा, यहां खना अगर चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य से अपनी दुविधा साझा कर पाई होती तो उसकी भविष्य भी बदल जाता, चाहे आज हो या बीते हुए कल में। कार्यालय या काम में अगर कोई परेशानी या दुविधा आए तो दूसरों से सहायता लेनी ही चाहिए, खासकर दुविधा के समय कभी भी चुप ना रहे, खना खामोश रहने के वजह से वह अपनी जिह्वा खो बैठी थी। प्रश्न के खिलाफ सख्त आवाज़ उठानी चाहिए। जरूरत के हिसाब से सहायता भी लेनी चाहिए, प्रश्न के हिसाब से अंदर से या बाहर से मदद भी लेनी चाहिए, कानून भी तो साथ है। साथ ही आज कल चल रहे 'इम्प्लॉई असिस्टन्स प्रोग्राम' जैसे कार्यों पर सक्रिय रूप से भाग लेना भी बेहद ज़रूरी है, क्योंकि मानसिक स्वास्थ्य की ध्यान रखना भी आज कल के व्यस्त जीवन शैली में आवश्यक हैं। मेधा भी तो इसी का शिकार रही थी, सदियों से मेधा की माँ एवं दादी भी। इसीलिए तो उसे खना की कहानी मिली, ताकि वह अपनी ज़िन्दगी में जो हो रहा है, जिस समस्या एवं परेशानियोंका वह सामना कर रहा है, उन सबको वह खुद से अलग करके देख सके, समझ सके एवं उसका समाधान भी ढूंढ सकें। यहां 'खना' की कहानी सिर्फ सहानुभूति ही नहीं जगाती, बल्की वह, यह एहसास दिलाती है कि वह अकेला नहीं है, और गलतियों को समझ-सुधारकर वह आगे बढ़ सकती है ओर कुछ कर दिखा सकती है।

स्त्री समस्या के आधारभूत समाधान के तौर पर यह कहा जा सकता है कि पुरुष सत्तात्मक विचारधारा को ही पहले बदलना है। इसके लिए उनके सोच को बदलना पड़ेगा, सोच तभी बदलता है, जब सही शिक्षा प्राप्त हो। सही शिक्षा के बारे में मीरा कान्त का कथन है कि, "मैं कहती हूं कि एक पुरुष को शिक्षित करेंगे, तब परिवार शिक्षित होगा। मगर पुरुषों को शिक्षित करना होगा समतामूलक नई मूल्य व्यवस्था में।"[17] इस प्रकार पुरुष सत्तात्मक विचारधारा के चिंताधारा को ही बदला जा सकता है।

ऐसे ही हर दृष्टि से राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं अन्य पहलुओं पर समानता को ला बिठाना, जो लिंगभेदवादी विग्रचारधाराओं को मिटाकर हर जगह समानता की गूंज पैदा करना इस नाटक और लेखिका का उद्देश्य है, और उसमें वह सौ प्रतिशत जीत भी हासिल कर चुकी हैं।

संदर्भ ग्रंथ

- मीरा कान्त के नाटकों में पात्र निरूपण – विद्या शामराव चौगले पृ. सं. 11
- नेपथ्य राग – मीरा कान्त, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली (2015) पृ. सं. 62
- वही पृ. सं. 63
- वही पृ. सं. 51
- वही पृ. सं. 42
- वही पृ. सं. 49
- वही पृ. सं. 49
- वही पृ. सं. 49
- वही पृ. सं. 57
- वही पृ. सं. 59
- वही पृ. सं. 59
- वही पृ. सं. 61
- वही पृ. सं. 61
- स्त्री विमर्श और नेपथ्य राग, कमलेश कुमारी, नई किताब, दिल्ली (2021) पृ. सं. 123
- वही पृ. सं. 123
- वही पृ. सं. 123
- मीरा कान्त के नाटकों में पात्र निरूपण – विद्या शामराव चौगले पृ. सं. 12